
Shri Hamsa Chatushshloki

श्रीहंसचतुश्श्लोकी

Document Information

Text title : Shri Hamsa Chatushshloki

File name : haMsachatushshlokI.itx

Category : deities_misc, gurudev, nimbArkAchArya, chatuHshlokI

Location : doc_deities_misc

Author : shrIjI

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : January 28, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 28, 2023

sanskritdocuments.org

Shri Hamsa Chatushshloki

श्रीहंसचतुश्श्लोकी



श्रीकृष्णरूपं रुचिरं वरेण्यं

विरच्यतेतोश्च धृतावतारम् ।

सनत्कुमारार्थकृतोपदेशं

हंसावतारं हृदि भावयेऽहम् ॥ १ ॥

जगत्स्रष्टा ब्रह्मा के मानस पुत्र महर्षि श्रीसनकादिक जिनके द्वारा आत्म-परमात्मतत्त्व परक गम्भीर प्रश्न किये जाने पर प्रश्न के समाधान में निमग्न श्रीब्रह्मा के निमित्त अ एवं श्रीसनकादिकों के प्रश्न-जिज्ञासार्थ सर्वनियन्ता सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ने ही श्रीहंस भगवान् के स्वरूप में अवतार धारण कर महर्षियों के प्रश्न का समाधान किया, जैसे उन श्रीहंस भगवान् की उम हृदय से भावना करते हैं ॥ १ ॥

दिव्यस्वरूपं शुभशुभ्ररूपं

कारुण्य-लावण्य-रसैकधाम ।

भवाऽख्यबीजं भवसिन्धुसेतुं

हंसावतारं हृदि भावयेऽहम् ॥ २ ॥

जिनका परम मङ्गलमय धवल दिव्य स्वरूप है, करुणा, मधुरता और रस अर्थात् आनन्द के धाम हैं इस थराथरात्मक सम्पूर्ण जगत् के श्रेष्ठ कारणरूप हैं, भवसागर से उद्धार के सेतुरूप अेकमात्र परमाधार हैं जैसे उन श्रीहंस भगवान् की अपने अन्तःकरण से अभिवन्दना करते हैं ॥ २ ॥

सर्वेश्वरं कृष्णसुतुपमाद्यं

सनत्कुमारादिकसेव्यमानम् ।

वेदान्त-राधान्तमनोज्ञबीजं

हंसावतारं हृदि भावयेऽहम् ॥ ३ ॥

समस्त वेदान्तादि सिद्धान्त के अेकमात्र कारुण्य पावन परमाधार, इस अभिल ब्रह्माण्ड के आदिरूप कृष्णस्वरूप सर्वेश्वर श्रीहंस भगवान् को अपने अन्तर्मानस से भावना पूर्वक प्रणति अर्पित करते हैं ॥ ३ ॥

अतीवरभ्ये भुवि पुष्करे य

धृतावतारं जगतो हिताय ।

शास्त्रे प्रसिद्धं तमचिन्त्यरूपं

हंसवतारं हृदि भावयेऽहम् ॥ ४ ॥

इस भूमण्डल पर श्रीब्रह्मदेव का दिव्य क्षेत्र परम पावनतम अतीव रमणीय युगादि-तीर्थगुरु श्रीपुष्कर में जिन्डोने लोक कल्याण के लिये हंसस्वरूप अवतार धारण किया जो यथार्थ में परम अनिर्वचनीय अचिन्त्यरूपात्मक है जिसका वर्णन श्रीमद्भागवत महापुराणादि शास्त्रों में सुप्रसिद्ध सुन्दर वर्णन है । जैसे उन श्रीहंस भगवान् की अपने हृदय-मन्दिर में हम भक्तिपूर्वक भावना करते हैं ॥ ४ ॥

हंसभगवतो दिव्या यतुश्श्लोकी सुष्प्रदा ।

राधासर्वेश्वराद्यैर्न शरणांतेन निर्मिता ॥ ५ ॥


श्रीहंस भगवान् की यह दिव्यस्वरूपा यतुश्श्लोकी जो परमानन्द प्रदान करने वाली है और जिसकी रचना उन्हीं की कृपा से हमें निमित्त बना कर यथामति बन पड़ी है । भावुकजन इसका अवश्य मनन करें ॥ ५ ॥

इति श्रीहंसचतुश्श्लोकी समप्ता ।

Proofread by Mohan Chettoor

——
Shri Hamsa Chatushshloki

pdf was typeset on January 28, 2023

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

